शारदापीठ

बिरला विद्या विहार, पिलानी

।। ऊँ सरस्वत्यै नमः ।।

भारत की राजधानी दिल्ली से लगभग 200 कि॰मी॰ दूर हरियाणा की सीमा से सटे राजस्थान के झुंझुनू जिले के पिलानी कस्बे, जिसे शिक्षा नगरी भी कहा जाता है, संपूर्ण विश्व के आकर्षण का केंद्र रही है। राजा बलदेवदास बिरला जी ने सन् 1901 में पिलानी में पाठशाला बनाकर शिक्षा के जिस कल्पतरु का बीजारोपण किया उसे आगे चलकर उनके पुत्र श्रीयुत् घनश्याम दास बिरला जी ने सींचकर, 'बिरला एजुकेशन ट्रस्ट', पिलानी– जिसके अंतर्गत पाँच विद्यालय समाविष्ट हैं, की स्थापना सन् 1929 ई॰ की। जिसका उद्देश्य भारत में उन्नत एवं आधुनिक शिक्षा द्वारा राष्ट्रनिर्माण के लिए योगदान करना रहा है। सन् 1964 ई॰ में बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नालॉजी एंड साइंस (बिट्स), पिलानी की स्थापना हुयी, इस प्रतिष्ठित शैक्षिक संस्था का उद्देश्य उच्च शिक्षा– क्षेत्र में तकनीकी एवं विज्ञान के प्रचार– प्रसार की सहायता से राष्ट्र के उत्थान में योगदान करना रहा है।

इस ऐतिहासिक शैक्षिक नगरी में अनेकानेक प्रसिद्ध एवं प्राचीन हवेलियाँ, मंदिर, विद्यालय, उद्यान, स्मारक एवं अस्पताल इत्यादि सुशोभित हैं। प्राचीन मंदिरों में सन् 1850 में बने गोपीनाथ जी का मंदिर, सन् 1901 में बने शिवालय, सन् 1907 में बने देवी मंदिर, सन् 1907 में श्रीराम मंदिर, सन् 1919 में बने पहाड़ी मंदिर और सन् 1947 में बने हरलालका मंदिर आदि इस भूमि को पवित्र बनाते हुए जन– मानस भावनाओं में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

इसी श्रृंखला में अद्वितीय, अद्भुत, ऐतिहासिक, अपूर्व और अलौकिक तथा वास्तु– शिल्प एवं मूर्तिकला और मंदिर स्थापत्य की अनूठी परंपरा को निर्वाह करते हुए एवं शिल्पकला के नवीन प्रतिमान और आयाम प्रतिष्ठित करता हुआ पिलानी स्थित 'शारदापीठ ', जिसे 'सरस्वती मंदिर' भी कहा जाता है, की प्राण– प्रतिष्ठा एवं शिलान्यास; 19 जनवरी, सन् 1956 ई॰ को महान् पंडित, प्रसिद्ध दार्शनिक एवं भारत के उपराष्ट्रपति डॉ॰ सर्वपल्ली राधाकृष्णनन् के कर–कमलों द्वारा संपन्न हुआ।

इस मंदिर की महत्ता एवं विशिष्टता को जानने से पहले पाठक को निर्माणकर्ता का परिचय एवं मंदिर निर्माण की प्रेरणा, निर्माण कार्य की समीक्षा, आंतरिक कक्ष की बनावट एवं बाह्य कक्ष की वास्तु– शिल्प एवं मूर्तिकला आदि संदर्भों के विषय में अवश्य जान लेना चाहिए।

मंदिर निर्माणकर्ता का परिचय

श्रीयुत घनश्यामदास जी बिरला राजा साहब बलदेवदास बिरला के तृतीय पुत्र थे। वे जीवन भर अप्रत्यक्ष रूप से राजनीतिक और प्रत्यक्ष रूप से सामाजिक जीवन में सक्रिय भाग लेते रहे। सनातन धर्म के परिपोषक, भारतीय संस्कृति के संरक्षक, आध्यात्मिक उन्नति के साथ भौतिक विकास के मार्ग पर चलने वाले श्रीयुत घनश्यामदास जी बिरला ने ही पुरानी पिलानी से लगभग 1 कि॰मी॰ दूर बिरला विद्या विहार नामक शिक्षा केन्द्र बसाया। सन् 1954 में दिसंबर महिने के पहले सप्ताह में अपने कुछ साथियों के साथ शिवगंगा के आंगन में बैठे– बैठे अचानक ही उनकी दृष्टि दक्षिणी छोर पर गई, उन्हें आभास हुआ कि यह क्षेत्र खाली होने के कारण आकर्षक नहीं लग रहा था। उसी समय उनके मन में यह विचार आया कि दक्षिणी परिसर में एक ऐसे भवन का निर्माण कराना चाहिए जो यहाँ के शिक्षामय वातावरण के लिए उचित और अनुकूल हो। सन् 1955 ई॰ में श्री घनश्यामदास जी बिरला अपने पूज्य पिताजी के दर्शन करने के लिए काशी गए और अपने पिताजी से मंदिर बनवाने के लिए आज्ञा मांगी। मंदिर के लिए पिताजी का आदेश मिलते ही उन्होंने अपने पिताजी के समक्ष भारत के प्रसिद्ध अनेक मंदिरों के चित्र, आकार– प्रकार, शिल्प– विन्यास आदि उदाहरण स्वरूप स्केच प्रस्तुत किए, जिनमें से खजुराहों के देवालयों को अंतिम स्वीकृति ही प्रदान की गई।

इसके बाद जियाजीराव कॉटन मिल्स लि॰ बिरला नगर, ग्वालियर के जनरल मैनेजर श्री दुर्गाप्रसाद मंडेलिया, सन् 1955 ई॰ में खजुराहो के मंदिरों का विशेष अध्ययन करने गये। वहाँ की मंदिरों की सुंदरता और अद्‌भुत मूर्तिकला देखकर श्री मंडेलिया अत्यंत प्रभावित हुए और गहरे अध्ययन के बाद उन्होंने मूर्ति– स्थापत्य की दृष्टि से विश्वनाथ मंदिर को ही अधिक पसंद किया। इसी मंदिर का उन्होंने चित्र खिंचवाकर बिरला जी के सामने प्रस्तुत किया तथा मंजूर हो जाने के बाद ही लकड़ी का एक मॉडल बनाने के लिए उन्होंने ग्वालियर स्थित लश्कर के अनुभवी इंजीनियर श्री पंडित विन्देश्वरी प्रसाद को जुलाई, 1955 ई॰ में बनवाने का आदेश दिया। श्रीयुत घनश्याम दास जी बिरला एवं उनके पिताजी राजा साहब ने इस मॉडल को देखा एवं अपनी स्वीकृति प्रदान की तथा उसी तरह संगमरमर का देवालय पिलानी में विद्याविहार के सामने ठीक उसी स्थान (दक्षिण परिसर) पर निर्माण करने की आज्ञा दी, जिसका उल्लेख पहले किया जा

चुका है। यह मंदिर खजुराहो के विश्वनाथ मंदिर का अनुकरण करने के साथ– साथ गर्भगृह में सरस्वती देवी की प्रतिमा स्थापित करने की भी सलाह दी, क्योंकि यहाँ के शांत एवं शिक्षामय वातावरण के लिए ये ही अनुकूल प्रतीत होता है।

निर्माण कार्य की समीक्षा

ऐसे भव्य मंदिर का निर्माण चुनौतियों भरा कार्य था, जिसके लिए कठिन परिश्रम, लगन, साधना के साथ प्रबंधन क्षेत्र में भी कुशल होना भी आवश्यक था। मंदिर निर्माण कार्य के लिए ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जो कर्तव्य परायण होने के साथ– साथ दूरदर्शी भी हो, जो सुचारु रूप से कार्य को अंतिम रूप प्रदान कर सके, इसलिए श्री मंडेलिया जी ने मंदिर निर्माण कार्य के लिए श्री हरिश्चंद्र लाढ़ा को मैनेजर नियुक्त किया, जिनमें सभी उपर्युक्त विशेषताएँ सम्मिलित थीं। पं॰ विन्देश्वरी प्रसाद इंजीनियर, बिरला मिल्स् लि॰ के स्टॉफ मेम्बर श्री एल॰ पी॰ भटनागर (जिनका कार्य निर्माण कार्य के लिए कच्ची लेबर एवं मंदिर की जुड़ाई आदि का प्रबंध करना था) और पं॰ रामस्वरूप पचौरी के साथ श्री लाढ़ा जी जनवरी सन् 1956 के दूसरे सप्ताह तक ग्वालियर से पिलानी आ गए थे। इंजीनियर साहब ने पहले से ही निर्धारित स्थान में योजना के अनुसार खुदाई का काम आरंभ कर दिया। चूंकि, संपूर्ण मंदिर निर्माण का कार्य संगमरमर से ही होना निश्चित हुआ था इसलिए वास्तुकला के विद्वान और विशाल कार्य करने में सक्षम मकराना के चार ठेकेदारों को इस कार्य का ठेका दिया गया। इन्होंने इस विशेष कार्य के लिए एक नयी कंपनी ' एसोसिएटेड मारबल इन्डस्ट्रीज ' का रजिस्ट्रेशन कराया। इस कंपनी और बिरला एजुकेशन ट्रस्ट के बीच चिड़ावा न्यायालय में ट्रस्ट के फाईनेंस ऑफीसर श्री विशम्भर लाल छारिया के बीच समझौता हुआ, जिसमें मंदिर निर्माण के लिए सारा मारबल मकराना की प्रथम सफेद क्वालिटी का होना आवश्यक था। मकराना में काम को भलि– भाँति चलाने और तैयार पत्थरों को मंजूरी देना का काम श्री रामस्वरूप पचौरी का था। सर्वप्रथम 16 जनवरी, 1956 में अमरू नामक कारीगर द्वारा आरंभ किया गया कार्य आगे चलकर लगभग 300 शिल्पकारों द्वारा किए जाने लगा।

.......और वो ऐतिहासिक दिन आ ही गया जब दिनांक 16 जनवरी, 1956 को पिलानी के 25 विद्वानों तथा ब्राह्मणों द्वारा इस मंदिर की आधार शिला रखी गयी। इसकी नींव में घी, मुहर, और सभी प्रकार के

सिक्कों से युक्त ताँबें के कलश के अलावा उस दिन का समाचार पत्र, चाँदी का शेषनाग और एक विशेष ताम्रपत्र, जो बिरला संस्कृत कॉलेज के आचार्य श्री अनन्तदेव जी त्रिपाठी द्वारा विरचित संस्कृत श्लोक द्वारा जिसमें बिरला परिवार की वंशावली अंकित है, उसे भी आधारशिला के नीचे रखा गया। इसके बाद 21 ब्राह्मणों द्वारा 11 दिनों तक दुर्गा पाठ किया गया तथा काशी से विशेष रूप से निमंत्रित पंडितों द्वारा सोमवार दिनांक 27 फरवरी, 1956 ई॰ को सुबह यज्ञ एवं पूजन आदि कार्य संपन्न हुआ और प्रसिद्ध दार्शनिक एवं भारत के उपराष्ट्रपति डॉ॰ सर्वपल्ली राधाकृष्णनन् के करकमलों द्वारा शिलान्यास कार्य संपन्न हुआ।

श्री गुलाम फ़रीद जी भवन– निर्माण कला के विशेषज्ञ थे, जोकि ठेकेदारों द्वारा नियुक्त किए गए थे, सन् 1957 में पं॰ विन्देश्वरी प्रसाद इंजीनियर के परलोक सिधारने के बाद, उन्होंने ही निर्माण कार्य बहुत ही कार्य कुशलता के साथ संपन्न कराया। मारबल पीसेज का पहला वैगन 15 फरवरी, 1956 को पिलानी भेजा गया। रेल से माल भेजने में हुयी असुविधा के कारण मारबल ट्रकों से भेजा गया। इस प्रकार मकराना से मंदिर के लिए कुल 323 वैगनों व ट्रकों के द्वारा 32774

घनफुट मारबल भेजा गया जिसमें 3923 फुट प्लेन, 10886 फुट मोल्डेड, 17163 फुट कर्वड, 570 फुट रिवेटेड और 232 फुट कर्वेचर का था। इसके अतिरिक्त 1241घनफुट मारबल मूर्तियों में अलग प्रयुक्त हुआ।

मूर्तियों में नक्काशी का काम सबसे पहले मकराना में ही शुरू किया गया था। मंदिर की चौखटों में एक इंच की खुदान में बनी सभी मूर्तियाँ मकराना के शिल्पकारों की ही देन है। इसके अलावा बाहरी कमरे में लगे सिंह, पाँच भद्रों के शिखरों की मूर्तियाँ, तोरण द्वार और प्रवेश कक्ष में लगे विशालकाय हाथियों आदि को भी मकराना में ही बनाया गया था। इसके अलावा सभी मूर्तियों के पत्थर मकराना से जयपुर ले जाए गए। प्रशासन से सम्मानित और श्रेष्ठ मूर्तिकारों की देखरेख और निर्देशन में मूर्तियों को बनाने का काम लगभग 3 साल तक चलता रहा।

मंदिर की नींव लगभग 15 फीट गहरी और 6 फीट चौड़ी हैं। बाहर के चबूतरे में ग्वालियर का सेन्ड स्टोन लगा हुआ है और इसकी ऊँचाई 7 फीट की है। मंदिर के बाहरी चबूतरे की लंबाई

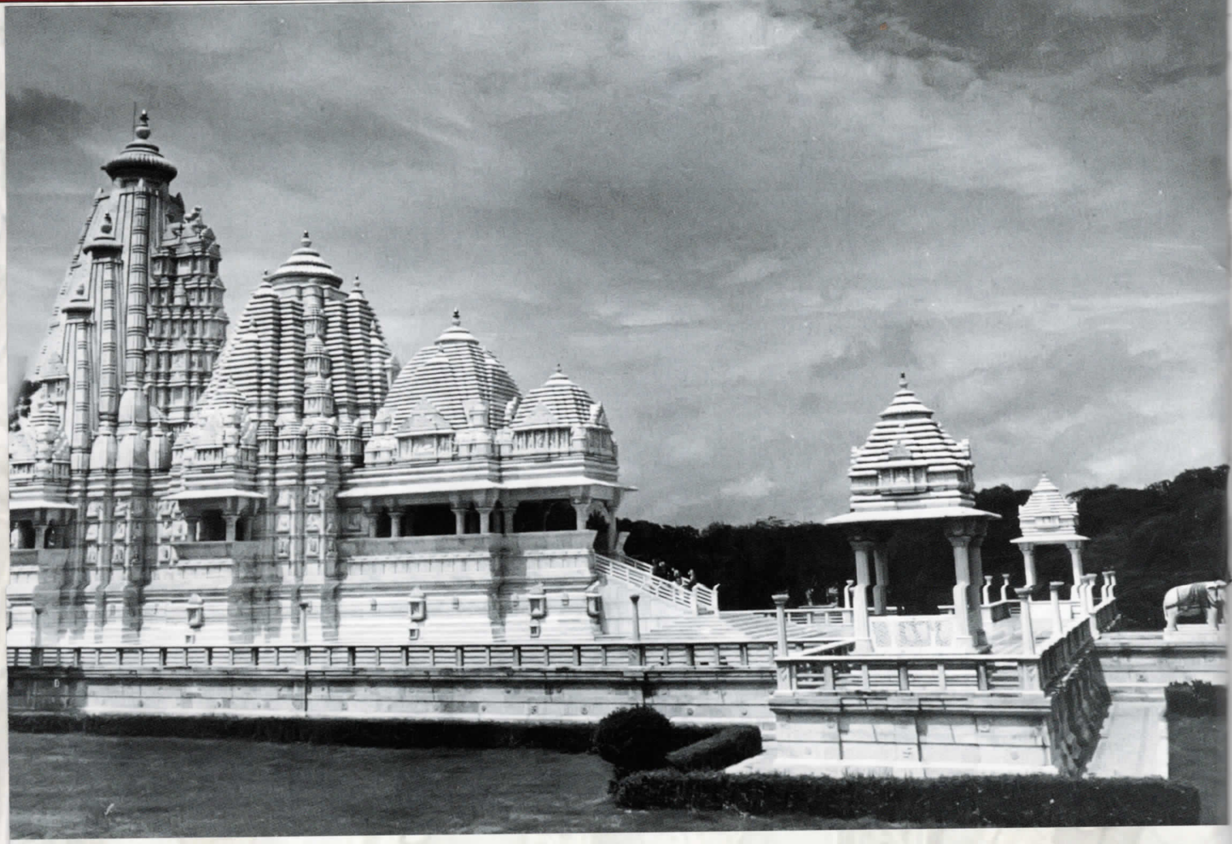

212 फुट व चौड़ाई 106 फुट है। सीढ़ियों सहित मुख्य मंदिर की लंबाई 151 फुट और चौड़ाई 106 फुट है। प्रवेश मंडप से शिखर की ऊँचाई धरातल से 42 फुट 6 इंच है और मुख्य शिखर की ऊँचाई 108 फुट है। 70 खंभो पर टिके हुए इस मंदिर में सभी खंभों पर शिखर का 850 मन का भार है। ये खंभे सात भागों को जोड़कर बने हैं। सबसे ऊपर के भाग में जो कीचक की 240 मूर्तियाँ बनी हैं वे जयपुर के प्रसिद्ध कलाकार पं॰ नारायणलाल जैमिनी द्वारा बनाई गई हैं।

मंदिर निर्माण के काम में लगभग 300 कलाकार मकराना में, 110 पिलानी में तथा 40 मूर्तिकार जयपुर में कार्यरत रहे थे। मंदिर में सबसे अधिक लंबाई के पत्थर सभा मंडप के लिन्टल हैं, इनकी लंबाई 16 फुट एवं चौड़ाई 2 फुट 3 इंच है। मंदिर का सबसे भारी पत्थर अर्धमंडप शिखर के पीछे के भाग का डोडिया है, जिसका भार 70 मन है। मंदिर निर्माण का काम 16 जनवरी 1956 का शुरू हुआ तथा 30 जून 1959 में पूरा हो गया था। इसी दिन प्रमुख शिखर का बत्तीस घनफुट मारबल का लगभग 60 मन भार का कलश स्थापित किया था। इसके बाद सन्

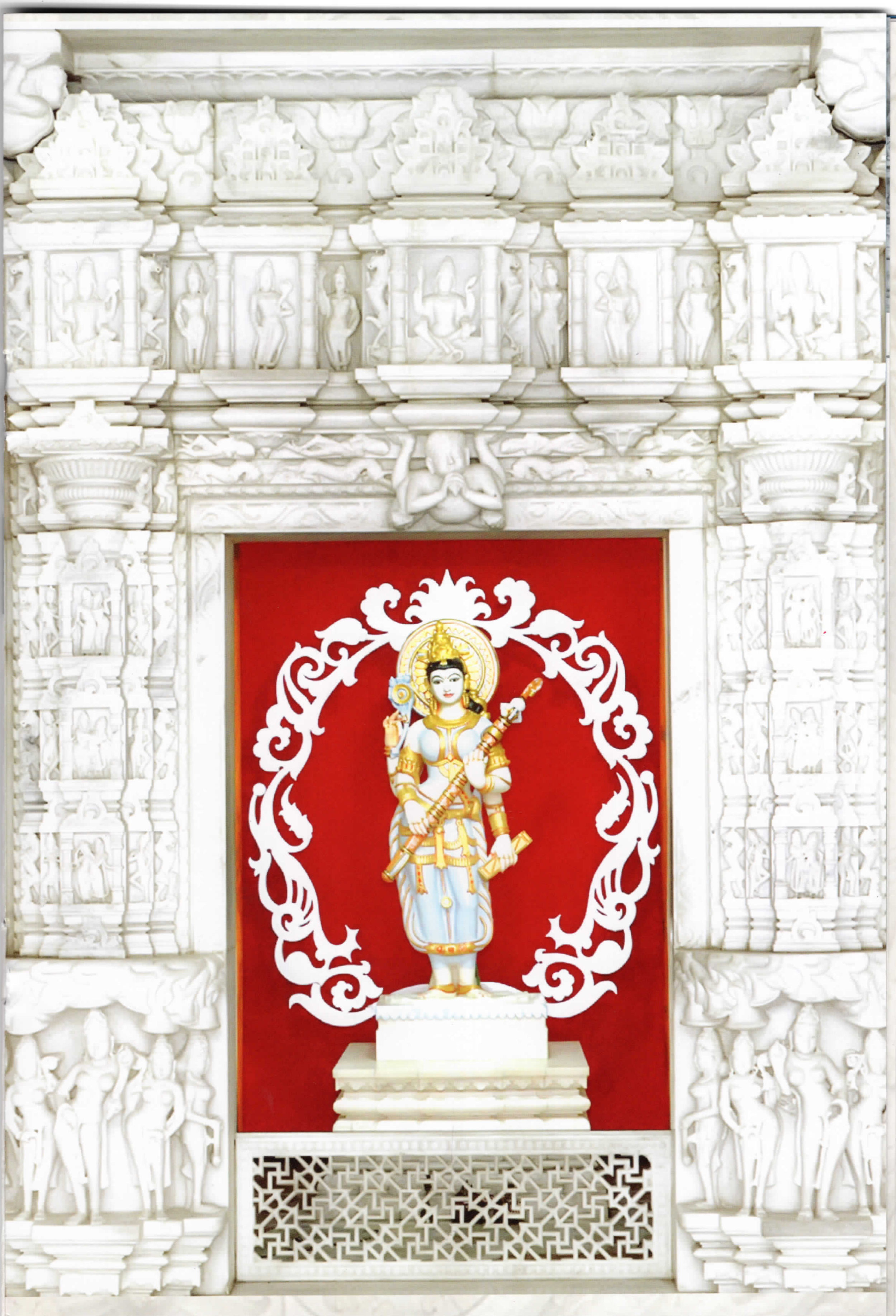

1960 तक घिसाई एवं पॉलिश का काम चलता रहा। मंदिर के प्रांगण में राजा बलदेवदास जी बिरला तथा पूजनीया रानी साहिबा की दो छतरियाँ भी बनाई गई हैं, जिनमें 1325 घनफुट मारबल प्रयुक्त हुआ है। लगभग 27 हजार रूपये लागत से बनी इन दोनों मूर्तियों में अष्टधातु का प्रयोग हुआ है। मंदिर के शिखर में प्रमुख 18 कलशों के ऊपर तांबे के कलश बनाकर उन पर 45 तोला सोने का वरक बनवा कर चढ़ाया गया हैं।

देवी सरस्वती की प्रमुख मूर्ति कोलकाता के विख्यात कलाकार श्री पाल द्वारा बनाई गई है, जिसके बनाने में चार हजार रुपया खर्च हुआ था। इस अद्‌भुत मंदिर का उद्‌घाटन भारत के तत्कालीन वित्त मंत्री श्री मोरारजी देसाई द्वारा 6 फरवरी सन् 1960 ई॰ को सायंकाल में किया गया। श्री देसाई ने अपने भाषण में कहा कि– ''पिलानी के इस विद्या विहार क्षेत्र में सरस्वती का मंदिर तो पहले से ही विद्यमान था जहाँ के प्रशांत वातावरण में देश के समस्त प्रांतों से आए हुए हजारों विद्यार्थी भारती की मूक साधना में दत्तचित्त हैं परन्तु श्री बिरला जी ने उसे मूर्तरूप देकर अद्वितीय भव्यता एवं पूर्णता प्रदान कर दी है''।

आंतरिक कक्ष की बनावट

मंदिर की शुरूवाती सीढ़ियों पर चढ़ते समय मुख्य तोरण द्वार दर्शक की मंगल कामना करता हुआ एवं विशालकाय हाथियों को देखकर दर्शक सुख की अनुभूति करता है। यह तोरण द्वार मारबल के दो भागों को जोड़कर बनाया गया है, परन्तु दर्शक बहुत ही कठिनाई से जान पाएगा कि जोड़ कहाँ है ? इस तोरण

द्वार के एक किनारे पर सरस्वती एवं दूसरे किनारे पर गणेशजी की मूर्ति है। इसके ऊपरी भाग में सुरबालाएँ पुष्पमाला को प्रस्तुत करती दीख रही हैं।

इस विशाल मंदिर में मूर्तियों की विभिन्नता का आधिक्य भी एक विशेषता है। इसमें 446 मूर्तियाँ अलग से मारबल के टुकड़ों में बनाकर लगाई गई हैं, जिसमें शंकर भगवान की 44 और विष्णु भगवान की 24 प्रतिमाएँ हैं। इसके अलावा 513 मूर्तियाँ लिन्टलों में, खंभों के ऊपरी भाग में, गर्भगृह के द्वार और बाहरी कक्ष में उकेरीं गई हैं।

प्रवेश मंडप के लिन्टलों में सामने की ओर सरस्वती, गणेश और गायत्री की मूर्तियाँ हैं। बाईं ओर भगवान चन्द्रमौलि विभिन्न मुद्राओं में अंकित हैं। दाहिनी ओर ऋषि वाल्मिकि रामायण की रचना करते दीख रहे हैं। आगे चलकर अर्धमंडप के पीछे के भाग में भगवान कृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन अनायास ही दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देता है। महामंडप के सामने सावित्री, नृसिंह और विष्णु– ध्रुव की मूर्तियाँ हैं। दाहिनी ओर महिषासुर मर्दिनी, दुर्गा, चामुंडा की प्रतिमाएँ हैं, वहीं बाईं ओर अर्जुन, चक्रधारी कृष्ण और गोपूजन का मनोहारी दृश्य पलभर के लिए

आराधक को मोहित कर लेता है। संक्षेप में कहें तो इस मंदिर में राम, कृष्ण, शिव, विष्णु, दुर्गा आदि सभी देवी और देवताओं की लीलाओं को मूर्ति के रूप में अंकित किया गया है। परिक्रमा करते समय दर्शकों के मनोरंजन और शिक्षा के लिए अप्सराओं, किन्नरों, हाथी, घोड़ों, सिंह आदि की मूर्तियाँ खुदाई के रूप में अंकित हुई है। पश्चिमी भाग में अस्त्र– शस्त्र से सुसज्जित महिषासुर मर्दिनी की विभिन्न हाव– भाव, चेष्टाएँ आदि दर्शकों को आश्चर्य चकित कर देती हैं।

बाह्य कक्ष का वास्तु– शिल्प एवं मूर्तिकला

इस देवालय में स्थापित सरस्वती देवी की प्रतिमा और राष्ट्रपति भवन में रखी हुई सरस्वती देवी की मूर्ति बिल्कुल समान हैं। सरस्वती देवी की प्रतिमा के दाहिनीं ओर भगवान विष्णु और लक्ष्मी जी की मूर्तियॉ हैं। बाईं ओर भगवान शंकर, पार्वती सहित आशीर्वाद प्रदान कर रहे हैं। चबूतरे की बाईं ओर से परिक्रमा करते हुए प्रवेश मंडप के बीच में भगवान शिव सुशोभित होते हैं, जिनके दाहिनी ओर भगवान राम और सीता व बाईं ओर राधा व कृष्ण मनोहारी रूप में भक्तों में भक्ति जगाते से प्रतीत होते हैं। इसके आगे रामायण की अनेक घटनाओं जैसे मारीच वध, राम– केवट संवाद और अशोक वाटिका में माता सीता की मूर्ति को सजीव रूप से अंकित किया गया है। खजुराहो मंदिर का अनुकरण करते इस मंदिर में, अगले ही पल हमें ढ़ाई फुट ऊँची तथा दो फुट चौड़ी रथक की प्रमुख 86 मूर्तियॉ दृष्टिगोचर होती हैं। इनमें सबसे नीचे की पंक्ति में शिव– पार्वती, लक्ष्मीनारायण, दुर्गा और वामन अवतार की प्रतिमाएँ अचानक खजुराहो का स्मरण करा देती हैं। इस मंदिर में महापुरूषों के चित्रों का समन्वय इस देवालय की एक अन्यतम विशेषता है, जो इस मंदिर को अन्य मंदिरों से अलग करती है। भारत के 25 महानुभावों की मूर्तियाँ रथक की द्वितीय पंक्ति में लगाई गई है। इस मंदिर में स्वामी दयानंद, स्वामी विवेकानंद, लो॰ तिलक, पं॰ मदन मोहन मालवीय और महात्मा गाँधी जी की मूर्तियाँ भी स्थापित की गई। रथक की दूसरी पंक्ति में ही आचार्य पाणिनि, भास्कराचार्य, पंतजलि आदि की भी मूर्तियाँ विद्यमान हैं।

इसके अतिरिक्त दूसरी पंक्ति में ही महाभारत के रचयिता श्री वेदव्यास, देवताओं के गुरू बृहस्पति, महर्षि वाल्मीकि तथा मनु की प्रतिमाएँ हैं। तीसरी पंक्ति में भगवान् शिव का विषपान, गोवर्धनधारी कृष्ण, राम–जन्म और चीरहरण आदि के दृश्य दर्शकों में अनायास ही भक्ति का संचार कर देते हैं। इसी पंक्ति में विष्णु के मोहिनी रूप को ही संभवतः देव कन्याओं की विभिन्न चेष्टाओं द्वारा व्यक्त किया गया है। आचार्य विष्णुगुप्त की प्रतिमा के बाद राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी और कविकुल गुरू कालिदास की मूर्तियाँ दिखलाई देती हैं।

अंतराल शिखर में इस ओर कुल 33 मूर्तियाँ हैं, जिनमें शेषनाग, वरूण और यशोदा द्वारा दही मंथन की प्रतिमाएँ हैं। प्रत्येक भदर के शिखर में 11 मूर्तियाँ अंकित की गई हैं। दक्षिणी छोर पर मत्स्यावतार, वराह अवतार और शिव की मूर्तियाँ दिव्यता प्रदान करती हैं। पीछे की ओर आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती, हिंदू धर्म के प्रचारक स्वामी विवेकानंद, लोकमान्य गंगाधर तिलक एवं गणितज्ञ रामानुजम् की मूर्तियाँ भी विशेष रूप से सराहनीय हैं।

तृतीय पंक्ति में माता सीता लव–कुश को धनुर्विद्या सिखा रही हैं और शकुन्तला अपने सुपुत्र सर्वदमन, जोकि शेरों के दाँत गिनता दिखाई पड़ रहा है ; को देखकर गद्‌गद होती सी दीखाई पड़ रही है। इसके बाद मंदिर के पश्चिमी ओर रावण द्वारा कैलास पर्वत को उठाने का दृश्य है वहीं दूसरी ओर भगवान विष्णु शेषनाग की शैया पर विराजमान हैं। तृतीय पंक्ति में ही गजेन्द्र मोक्ष, रामकृष्ण परहंस, पीछे की ओर– नृसिंह अवतार और परशुराम अवतार भी विशेष रूप से दर्शनीय हैं।

रथ की द्वितीय पंक्ति में ही प्रसिद्ध वैद्य धन्वंतरी, कवीन्द्र रवीन्द्र, ग्रीक वैज्ञानिक आर्कमिडीज मैडम क्यूरी आदि की भी मूर्तियाँ हैं। पश्चिमी भाग की इस पंक्ति में सर्वप्रथम सी.वी. रमन् की मूर्ति है, इसके बाद पेनिसिलीन के आविष्कारक डॉ0 फ्लेमिंग, कीटाणु की खोज करने वाले लुई पाश्चर और ग्रामोफोन व बिजली के आाविष्कारक थॉमस एडीसन की मूर्तियाँ हैं। इसके अलावा न्यूटन, आइन्सटाईन, गैलिलियो आदि पाश्चात्य वैज्ञानिक विभूतियों की भी अनेक प्रतिमाएँ दिखलाई पड़ती हैं।

पश्चिमी भाग के अंतराल शिखर में 29 मूर्तियाँ स्थापित हैं, इनमें सबसे ऊपर स्वामी शंकराचार्य मंडन मिश्र को शिवलिंग भेंट कर रहे हैं। महामंडप शिखर की 14 मूर्तियों में परशुराम की प्रतिमा साक्षात् वीर भाव का दर्शन करा रही है, यह चित्र गीता मंदिर वृंदावन से लिया गया था। गुरू वसिष्ठ की प्रतिमा का सबसे ऊपर होना मानो उनका स्थान बताला रही है। इस भाग में ही परशुराम, कल्कि अवतार, अप्सरा द्वारा पत्र लेखन आदि अंकित हैं। महामंडप की 14 मूर्तियों में से अर्धनारीश्वर, मीरा, अग्नि व अगस्त्य ऋषि की मूर्तियाँ मानो स्वयं ही अपनी महिमा गाथा गा रही हैं। प्रेम के अलौकिक रूप का अंकन पाँच मूर्तियों में किया गया है, जिनमें दिव्यता दिखलाई पड़ती है। द्वितीय पंक्ति में हिंदू धर्म के संस्थापक और अद्वैतवाद के प्रवर्तक स्वामी आदि शंकराचार्य, चैतन्य महाप्रभु, गोस्वामी तुलसीदास और विशिष्टाद्वैत के प्रर्वतक रामानुजाचार्य की भी मूर्तियाँ हैं।

इसके बाद कुछ आगे चलकर अर्धमंडप के ऊपरी भाग में भगवान कृष्ण गोपियों के साथ रासक्रीड़ा कर रहे हैं। दाहिनी ओर सुदर्शन चक्र हाथ में लिए महाभारत के युद्ध के मैदान में गीता का उपदेश दे रहे हैं। थोड़ा आगे चलते ही हमें भगवान विष्णु की मूर्ति दिखलाई देती है जो खजुराहो तकनीक पर बनी है। इसके बाद इस मूर्ति के दाहिनी ओर ब्रह्मा और बाईं ओर शंकर भगवान हैं, इस प्रकार इस विशालकाय मंदिर के बाहरी कक्ष की परिक्रमा पूर्ण होती है।

श्रीनिवास रामानुजन्
अयंगर

स्वामी विवेकानंद

पाणिनी

भास्कराचार्य

अब्राहम लिंकन

लेनिन

महामना
मदनमोहन मालवीय

संत तुकाराम

मैडम क्यूरी

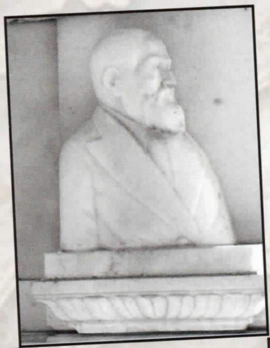

आर्कमिडीज़

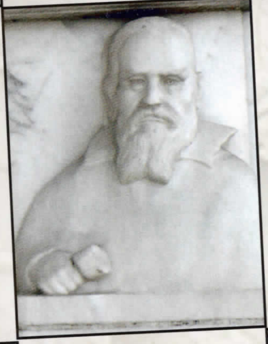

गैलीलियो गैलिली

आचार्य चाणक्य

भगवान धन्वन्तरि

लुई पास्चर

स्वामी महावीर

आइज़क न्यूटन

अलक्जेंडर फ्लैमिंग

महर्षि पतंजलि

लोकमान्य
बालगंगाधर तिलक

रवीन्द्रनाथ टेगोर

जॉन॰ एफ॰ केनेडी

स्वामी
रामकृष्ण परमहंस

अलर्बट आइंस्टाइन

सर सी॰ वी॰ रमण

कुन्देन्दु हिमधवला सदृश, हंसस्थिता रसदायिनी।
मालाधरा पुस्तकधरा लोकावलम्बन रूपिणी।।
सुरवन्दिता माँ भारती सुलभा शुभा रीतिप्रदा।
विद्याविभव दे शारदे! हंसासना वीणाधरा।।

सम्पादन :
डॉ० अभिनव शुक्ल

बिरला विज्ञान केन्द्र (बिरला शिक्षण संस्थान), पिलानी द्वारा प्रकाशित